International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 293-294

सुघ से प्राप्त शुंगकालीन मृन्मूर्तियां : एक अध्ययन

उमेश कुमार
इतिहास प्राध्यापक, रा0व0मा0वि0 जसराना, सोनीपत, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

विभिन्न कलाएं जो मुख्य रूप से हाथों से रूपांकित होती हैं हस्त शिल्प कही जाती हैं और इनका निर्माण करने वाला शिल्पकार कहा जाता है प्राचीन ग्रन्थों में कला और शिल्प को एक ही विद्या के अंतर्गत माना गया है लेकिन वैदिक साहित्य में इनकी अलग–अलग उक्तियां भी मिलती हैं । देवताओं के प्रधान शिल्पी विश्वकर्मा को शिल्पवतानवद और कला विदमावर दोनों ही कहा गया है । शिल्प विद्या के अंतर्गत मृदभाण्ड–शिल्प, काष्ठ शिल्प, मृन्मूर्ति कला वास्तुशिल्प आदि का समावेश है । प्राचीन काल से ही विभिन्न प्रकार की मृन्मूर्तियों का निर्माण होता आया चाहे वे सजावट के रूप में या फिर आय प्राप्त करने के लिए बनाई जाती हों, इन मृन्मूर्तियों से उस समाज के किया कलापों व उनकी जीवन शैली को अच्छी प्रकार से समझा जा सकता है । इस शोध पत्र से शुंघ प्राप्त शुंगकालीन मृन्मूर्तियों का अध्ययन किया जाएगा ।

शुंग काल में निर्माण शैली की दृष्टि से मृन्मूर्ति कला का एक नवीन अध्याय आरम्भ हुआ [1]। इस काल में कलाकारों ने सांचे का व्यापाक रूप से लाभ उठाया । वे एक ही सांचे से कई मूर्तियों को निकाल लेते थे । वस्तुतः इस कला से मृन्मूर्ति कला में एक स्वाभाविक निखार सौष्ठव दिखलाई देता है । इस काल को हम भारतीय मृत्कला का उत्कृष्ट काल कह सकते हैं ।

मातृदेवी की मूर्ति– मातृदेवी की एक मृन्मूर्ति सुंघ यमुनानगर (हरियाणा) से प्राप्त हुई है जिससे माता अपने छोटे बच्चे को साथ लेकर जा रही है । बच्चा उसके बायें तरफ है । यह मृन्मूर्ति कमर के ऊपर तथा घुटनों से नीचे खण्डित है । नारी ने साडी पहन रखी है । बच्चे के बालों में कंघी की हुई है ।

अर्द्धनारीश्वर की मूर्ति– यह मृन्मूर्ति भी सुघ से मिली है । इसकी यह विशेषता है कि यह आधी शिव तथा आधी पार्वती की मृन्मूर्ति है । इसमें पार्वती को साडी बांधे तथा शिव को वस्त्र लपेटे हुए दिखाया गया है । मुंह खण्डित होने के कारण साफ नहीं है ।

नारी मूर्तियां– सुघ से शुंगकालीन मृन्मूर्तियां बहुत अधिक मिली हैं जिनमें नारी मूर्तियां अधिक महत्वपूर्ण हैं । इनमें एक मातृदेवी की मृन्मूर्ति है जो काले रंग की है तथा खडी अवस्था में है । इसमें नीचे का पूर्ण वस्त्र दिखाया गया है तथा नीचे तक माला लटकाई हुई है । कण्ठाहार में दो मोटी–मोटी फूलनुमा आकृति तथा कानों में कुण्डल हैं । आभूषण बहुत अधिक हैं जो घिस गए हैं । दोनों हाथ शरीर के साथ चिपके दिखाये गए हैं । बालों को व्यवस्थित किया गया है।

सुघ से प्राप्त नारी मूर्तियां भी खण्डित अवस्था में हैं । कानों में बडे–बडे कुण्डल पहने हुए हैं जो शुंगकाल में पहनने का रिवाज था । गले में माला पहनी हुई है । सिर के पीछे फूलों की पंखुडियां दिखाई दे रही हैं । चेहरे का हाव–भाव सुन्दर दिखाया गया है । सुघ से प्राप्त अन्य मृन्मूर्ति आधी पकी होने के कारण काली पड गई है जो केवल घुटनों के नीचे तक है । इसमे अधोवस्त्र साफ दिखाई दे रहा है । इसके दायें तरफ कोई लडकी खडी है [2]। जिसके वक्षःस्थलों का उभार साफ दिखाई दे रहा है, यह मातृदेवी तथा बच्चे की मूर्ति रही होगी ।

सुघ से प्राप्त नारी मूर्तियों का अनोखापन अपने आप मे बेमिसाल है, शुंगकाल में वस्त्र इतने पारदर्शी बनाये गए थे कि स्त्री अर्धनग्न दिखाई पडती है । कमर पर मेखला बांधी गई है तथा बायें हाथ में फूल पकडे हुए हैं । दायीं तरफ वस्त्र लटक रहा है । शायद यह स्त्री का डुपट्टा रहा होगा । पेट पर मालाएं शोभायमान हैं । धड से ऊपर तथा टखनों से नीचे मूर्ति खण्डित हो चुकी है । उसका कपडा इतना पारदर्शी है कि देहयाष्टि दिखलाई पडती है ।

दूसरी मृन्मूर्ति में नवयौवना के सिर तथा पैर गायब हैं, केवल शरीर बचा हुआ है जो कढाईदार वस्त्र पहने हुए है । दोनो हाथों में कंगन तथा गले में माला पहने हुए है । कमर बहुत पतली है । तीसरी मूर्ति भी नारी की है जो धारीदार वस्त्र पहने हुए है । गले मे मणियों की दो मालाएं पहने हुए है तथा हाथों में कंगन शोभा बढा रहे हैं ।

सुघ से प्राप्त एक नारी मृन्मूर्ति जो खण्डित अवस्था में है, इसके कानों में बडे–बडे कुण्डल, गले मे मोतियों की माला है जो स्तनों के बीच से लटक रही है । सिर पर ओढनी जिस पर सुन्दर गोटा लगाया गया है, बालों में जूडा बनाया गया है। इस मृन्मूर्ति में भारतीय ग्रामीण जीवन प्रतिबिम्बित होता है [3]।

मिथुनाकृतियां– एक मिथुन मृन्मूर्ति खण्डित अवस्था में सुघ से मिली है जिसके बायें तरफ पुरूष तथा दायें तरफ स्त्री है । स्त्री के हाथों में कोहनी तक चूडियां तथा गले में माला और हार दिखाई दे रहे हैं । पुरूष पैर मोडकर किसी ऊंचे स्थान पर बैठा दिखाया है । मृन्मूर्ति का बाहरी किनारा दिखाई नहीं दे रहा है ।

एक अन्य मिथुन मृन्मूर्ति और मिली है जिसमें पुरूष बायें तरफ तथा नारी दायें तरफ बैठी है । नारी ने कानों में बडे–बडे कुण्डल पहने रखे हैं । बालों का जूडा बना रखा है तथा जूडे में फूलों का गजरा लगा हुआ है । पुरूष ने बालों में अच्छी तरह कंघी कर रखी है । पुरूष का चेहरा खिला हुआ है ।

तख्ती लिखता बच्चा–सुघ से प्राप्त मृन्मूर्तियों में से ये सबसे निराली मूर्ति है । ऐसी ही एक मृन्मूर्ति राष्ट्रीय संग्रहालय की मृन्मूर्ति का मुख टूटा हुआ है । इन मूर्तियों का अध्ययन करने पर कई सारगर्भित एवं महत्वपूर्ण बातें सामने आती हैं । अध्ययन की सुविधा के लिए डॉ0 योगानन्द शास्त्री इनको तीन श्रेणियों में विभक्त करते हैं [4]।

1. जिन पर तख्ती के ऊपर ब्राहमी लिपि में केवल स्वर लिखे हैं।
2. जिन पर स्वर और व्यंजन दोनों लिखे हैं ।

3. जिन पर स्वर और व्यंजन कटमा लिखे हैं ।

इन मृन्मूर्तियों की सबसे बडी विशेषता यह है कि इनमें बालक को लिखते–पढते दिखाया गया है । इनसे तत्कालीन समाज की शिक्षा के प्रति जागरूकता सिद्ध होती है ।
प्रथम प्रकार की मृन्मूर्तियों मे ंबच्चे की आयु सीमा को ध्यान में रखते हुए, पूरी कलाकृति का अंकन करते हुए, बालक तख्तियों पर स्वर स्मरण करते हुए दिखाया है । बच्चे के शरीर पर आभूषण भी अधिक नहीं हैं और वह निर्वस्त्र है जैसा कि इस अवस्था में अधिकांशत होता है । दूसरी मृन्मूर्तियों की तरह इस पर दवात नहीं बनाई गई जिससे स्पष्ट है कि बच्चा दूसरे व्यक्ति के द्वारा लिखकर दिए गए स्वरों को केवल याद कर रहा है । अधिक छोटा होने के कारण उसकी स्वयं की क्षमता नहीं बन पाई है [5]।
दूसरे प्रकार की मूर्ति में बच्चे के सिर पर पगडी है, कानों में कुण्डल है और घुटनों के आस–पास दवात रखी है । बच्चे ने तख्ती को पैरों के साथ सटाकर खडा करना सीख लिया है । इस मृन्मूर्ति में बच्चे की बढती हुई आयु के अनुसार उसके हाथ में लेखनी पकडाई हुई है और दवात में लेखनी डुबोकर अक्षर लिखने का अभ्यास करता हुआ दिखाया गया है ।
तीसरे प्रकार की मृन्मूर्ति में बच्चे को अधिक सहज और चुस्त दिखाया गया है । इसमे बैठने की मुद्रा भी बदल गई है । कहना चाहिए इसमें थोडा और परिष्कार आ गया है और तख्ती को और अधिक सुगमता से पकडे दिखाया गया है ।

भोजन पात्र ले जाता सेवक– सुघ से एक मृन्मूर्ति मिली है जिसमें सेवक ने अपने बायें कंधे पर भोजन पात्र रखा हुआ है, उसमें रोटियां, सब्जी की कटोरियां तथा फल दिखाये गए हैं ।

वनर– शुंगकाल में मानव जीवन से संबंधित विभिन्न प्रवृतियों का अंकन मिलता है । हाथी, घोडा, कुत्ता आदि पशुओं तथा अनेक पक्षियों का अंकन भी सुघमें पर्याप्त मात्रा में मिलता है । इस मूर्ति में वानर को मनुष्य की तरह बैठा हुआ दिखलाया गया है जिसके दोनों हाथ दोनों पैरों पर टिके हुए हैं । गले में माला दिखाई गई है । चेहरे के हाव–भाव गहन सोच की मुद्रा में दिखाई दे रहे हैं [7]।

कछुआ– सुघ से कछुओं की दो मृन्मूर्तियां मिली हैं । पहली मूर्ति खण्डित है। इसके पैरों को सुन्दर ढंग से बनाया गया है । दूसरी मृन्मूर्ति का मुंह खण्डित है लेकिन शरीर पर धारियां अच्छी तरह बनी हुई हैं ।

बैलगाडी– सुघ से बैलगाडी की अनेक मृन्मूर्तियां मिली हैं । इनकी विशेषता यह है कि बैलगाडियां आधुनिक बैलगाडियों की तरह ही हैं ।

दवात– सुघ से बच्चे के द्वारा तख्ती लिखी जाती हुई दृश्य वाली मृन्मर्ति मिली है तथा इन मूर्तियों में दवात भी दिखाई गयी है [8]।
इस प्रकार हम देखते हैं कि ये मृन्मूर्तियां हमें शुंगकालीन मूर्तिकला व समाज के बारे में बताती हैं ।

संदर्भ

1. नीरज गौड, शुंगकाल में धर्म एवं कला, पृ0– 124–125
2. जगदीश प्रसाद, प्राचीन भारतीय मृन्मूर्ति कला पृ0– 42
3. जगदीश प्रसाद, प्राचीन भारतीय मृन्मूर्ति कला पृ0– 42
4. योगानन्द शास्त्री–प्राचीन भारत मे ंयौधेय गणराज्य, पृ0– 183
5. योगानन्द शास्त्री–प्राचीन भारत मे ंयौधेय गणराज्य, पृ0– 183
6. योगानन्द शास्त्री–प्राचीन भारत मे ंयौधेय गणराज्य, पृ0– 183
7. योगानन्द शास्त्री–प्राचीन भारत मे ंयौधेय गणराज्य, पृ0– 183
8. जगदीश प्रसाद, प्राचीन भारतीय मृन्मूर्ति कला पृ0–52